

25.2.22

पगादली पेठे उरु ककील नारी उपा ककील नारी
 सर तराज कि उखाऊ गीत के हंग अरिमाग हं
 पानी का नाग उरुत के उरुत ही उरुत को
 मने आज पलाग नही पाहते ही इही ऐक प
 खारि कराने पाहते ही नारी का नाग रही
 ऐक पल खारि किप जग ही पगादली मने
 अगाट देकर का लकील उरुत के दाखिल इप

ही मने

